प्रातः क्लास 23-12-68 ओमशान्ति पिता श्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। यह किसने कहा? आत्मा ने। अविनाशी आत्मा ने कहा शरीर द्वारा। शरीर और आत्मा में कितना फर्क है। शरीर 5तत्व का इतना बड़ा पुतला बन जाता है। भल छोटा है परन्तु फिर भी आत्मा से तो बड़ा जरूर है। पहले तो एकदम छोटा जैसे पिन्डी होती है। जब थोड़ा बड़ा होता है तो आत्मा प्रवेश करती है। बड़ा होते2 फिर इतना बड़ा हो जाता है। आत्मा तो चैतन्य है ना। जब तक आत्मा प्रवेश न करे तब तक पुतला कोई काम का नहीं रहता। कितना फर्क है। बोलने वाली भी तो आत्मा ही है। वह इतनी छोटी सी बिन्दी है। वह कब छोटी बड़ी नहीं होती। विनाश को नहीं पाती। अभी परम आत्मा बाप ने समझाया है कि मैं अविनाशी हूं। और यह शरीर विनाशी है। इनमें मैं प्रवेश कर पार्ट बजाता हूं। यह बातें तुम चिन्तन में लाते हो। आगे तुम न आत्मा को जानते थे न परमात्मा को जानते थे। सिर्फ कहने मात्र कहते थे यह परमपिता परमात्मा। आत्मा भी समझते थे परन्तु फिर कोई ने कह दिया तुम परमात्मा हो। किसने यह बतलाया। इन भक्तिमार्ग के गुरुओं और शास्त्रों ने। सतयुग में तो ऐसे कोई बदलावेंगे नहीं। अभी बाप ने समझाया है तुम मेरे बच्चे हो। आत्मा नेचरल है शरीर अननेचरल है मिट्टी का बना हुआ है। आत्मा तो सदैव अविनाशी है। कब विनाश नहीं छोटा बड़ा नहीं होता। शरीर तो छोटा बड़ा होता है ना। जब आत्मा इन में है तो बोलती चालती है। अभी तुम बच्चे जानते हो हम आत्माओं को बाप आकर समझाते हैं। निराकार शिव बाबा इस संगम युग पर ही इस शरीर द्वारा आकर सुनाते हैं। यह आंखें तो शरीर में रहती ही है। अभी बाप ज्ञान का चक्षु देते हैं। आत्मा में ज्ञान है नहीं तो अज्ञान चक्षु है। बाप आते हैं तो आत्मा को ज्ञान की चक्षु मिलती है। आत्मा ही सभी कुछ करती है। आत्मा कर्म करती है शरीर द्वारा। अभी तुम समझते हो बाप ने भी यह शरीर धारण किया है। अपना भी राज़ बताते हैं, सृष्टि के आदि मध्य अन्त का भी राज बताते हैं। सारी नाटक का नालेज देते हैं। आगे तुमको कुछ भी पता नहीं था। हां नाटक जरूर है, सृष्टि का चक्र फिरता है परन्तु कैसे फिरता है यह कोई नहीं जानते। रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त का ज्ञान अभी तुमको मिलता है। बाकी तो सभी ठहरे भक्त। बाप ही आकर तुमको ज्ञानी तू आत्मा बनाते हैं। आगे तुम भक्त तू आत्मा थे। तू आत्मा भक्ति करते थे। अभी तू आत्मा ज्ञान सुनते हो। भक्ति को कहा जाता है अंधियारा। भक्ति से तुम पतित होते हो। ऐसे नहीं कहेंगे भक्ति से भगवान मिलता है। बाप ने समझाया है भक्ति का पार्ट है। ज्ञान का भी पार्ट है। तुम जानते हो हम भक्त थे। तो कोई सुख न था। भक्ति करते धक्का खाते रहते थे। बाप को ढूंढते थे। अभी समझते हैं यह यज्ञ तप दान पुण्य आदि जो कुछ भी करते थे ढूंढते2 धक्का खाते2 तंग हो जाते, तमोप्रधान बन जाते हैं। क्योंकि गिरना होता है ना, झूठेश्र काम करना, छीछी होना होता है। पतित भी बन गये। ऐसे नहीं कि पावन होने लिये भक्ति करते थे। भगवान से मिलने लिये कोशिश करते थे। रट्टी मारते थे हे भगवान आकर के पावन बनाओ। आत्मा समझती है पावन बनने बिगर हम पावन दुनिया में जा नहीं सकेंगे। यह नहीं समझते हैं कि पावन बनने बिगर भगवान से नहीं मिल सकते। भगवान को तो कहते हैं कि आकर पावन बनाओ। पतित ही भगवान से मिलते हैं पावन होने लिये। पावन से तो भगवान मिलता ही नहीं। सतयुग में थोड़ेही ज्ञान(ल0ना0) से भगवान मिलता है। भगवान आकर के तुम पतितों को पावन बनाते हैं। और फिर तुम यह शरीर छोड़ देते हो। पावन तो इस तमोप्रधान सृष्टि में रह न सके। बाप तुमको पावन बनाकर गुम हो जाते हैं। उनका पार्ट ही ड्रामा में वन्डरफुल है। जैसे आत्मा देखने में नहीं आती है, भल सा0 हो तो भी समझ न सके। और तो सभी को समझ सकते हैं यह फलाना है, यह फलाना है। याद करते हैं चाहते हैं फलाने का चैतन्य में सा0 हो। और तो कोई मतलब नहीं। अच्छा चैतन्य में देखते हो फिर क्या? सा0 हुआ-फिर तो गुम हो जावेगा। अल्प काल क्षणभंगुर सुख की आशु पुरी होगी। इसको कहा जाता है अल्प काल क्षणभंगुर सुख। सा0 की चाहना थी वह मिला बस। यहां तो मूल बात है पतित से पावन बनने की। पावन बनेंगे तो देवता बन जावेंगे।

अर्थात स्वर्ग में चले जावेंगे। स्वर्ग में तो कोई जा न सके। जब तक समय न आये। शास्त्रों में तो लाखों वर्ष लिख दिया है। समझते हैं कलियुग में अजन 40हजार वर्ष पड़े हैं। बाबा तो समझाते हैं सारा कल्प ही 5000 वर्ष का है। तो मनुष्य अंधियारे में है ना। इसको कहा जाता है घोर अंधियारा। कोई में ज्ञान है नहीं। वह सभी है भक्ति। रावण जब से आता है तो भक्ति भी उनके साथ है। और जब बाप आते हैं तो उनके साथ ज्ञान है। बाप से एक ही बार ज्ञान का वरसा मिलता है। घड़ी2 नहीं मिल सकता। वहां तो तुम कोई को ज्ञान देते नहीं हो। दरकार ही नहीं। ज्ञान उनको मिलता है तो अज्ञान में हैं। बाप को कोई भी जानते नहीं। बाप को गाली देने बिगर कोई बात ही नहीं करते। यह भी तुम अभी समझते हो। दुर्गति में डालने लिये कितना माथा मारते हैं। गालियां देने, डिफेम करने कितना जोर देते हैं। तुम कहते हो ईश्वर सर्वव्यापी नहीं हैं। वह हम सभी आत्माओं का बाप है और वह कहते हैं कि मैं ठिक्कर भित्तर में नहीं हूं। तुम बच्चों ने अभी अच्छी तरह से समझा है। भक्ति बिल्कुल अलग चीज है। उनमें जरा भी ज्ञान नहीं होता। समय ही सारा बदल जाता है। ज्ञान का भी नाम बदल जाता, फिर मनुष्यों का भी नाम बदल जाता है। पहले कहा जाता है देवतायें। फिर क्षत्री। फिर वैश्य शुद्रं। वह हैं दैवीगुणों वाले मनुष्य और यह हैं आसुरी गुणों वाले मनुष्यों। बिल्कुल ही छी छी है। गुरुनानक ने भी कहा है असंख्य चोर ....मनुष्य कोई ऐसा कहे तो उनको झट कहे यह क्या तुम गाली देते हो। परन्तु बाप कहते हैं यह सभी हैं आसुरी सम्प्रदाय। तुमको क्लीयर कर समझाते हैं। वह रावण सम्प्रदाय वहराम सम्प्रदाय। गांधी भी कहते थे हमको राम राज्य चाहिए। यह नहीं समझते हैं हम पतित हैं। कुछ भी नहीं। अभी तुम देखते हो रावण राज्य में क्या2 है। रावण राज्य में हैं सभी विकारी। इनका नाम ही है वेश्यालय। गन्द में रहने वाले। रौरव नर्क है ना। इस समय के मनुष्य विषय वैतरणी नदी में पड़े हैं। मनुष्य जानवर पशुओं आदि सभी एक समान है। मनुष्यों की कोई भी महिमा नहीं हैं। सन्यासी भी कहते हैं यह सर्प सर्पणी है। बरोबर है ना। अभी यह जो एक दो को डंसते हैं यह डंसना छुड़ाव कौन? इ असुर से देवता कौन बनावे। दिखाते हैं असुरों और देवताओं की युद्ध लगी। देवताओं ने जीता। यह भी तुम अभी समझते हो असुरों को बाप आकर देवता बनाते हैं। इसमें लड़ाई आदि की तो बात ही नहीं। 5विकारों पर जीत पहन तुम असुर से देवता पद पाते हो। बाकी सभी खत्म हो जाते हैं। देवतायें सतयुग में रहते थे। अभी इस कलियुग में असुर रहते हैं। असुरी की निशानी क्या है? 5विकार। देवताओं को कहा जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी। और असुरों को कहा जाता है सम्पूर्ण विकारी। वह हैं 16कला सम्पूर्ण। और यहां है नो कला। सभी की काला काया ही चट हो गई है। अभी बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। बाप आते ही हैं पुरानी आसुरी दुनिया को चेंज करने। रावण राज्य वेश्यालय को शिवालय बनाते हैं। उन्होंने फिरनाम रख दिया है त्रिमूर्त हाउस। त्रिमूर्ति रोड। आगे थोड़ेही यह नाम था। अभी होना क्या चाहिए। यह सारी दुनिया किसकी है। परमात्मा की है ना। परमात्मा की दुनिया है जो आधा कल्प पवित्र आधा कल्प अपवित्र रहते हैं। क्रियटर तो बाप को कहा जाता है। तो उनकी ही यह दुनिया हुई ना। बाप समझाते हैं मैं ही मालिक हूं। मैं बीज रूप चैतन्य ज्ञान का सागर हूं। मेरे में सारा ज्ञान है। और कोई में नहीं। तुम समझ सकते हो इस सृष्टि के चक्र का नोलेज बाबा में ही है। बाकी तो सभी हैं गपोड़े। मुख्य गपोड़ा बहुत खराब है। जिसके लिये बाप डोराया देते हैं तुम मुझे ठिक्कर भित्तर में कुत्ते बिल्ले में चण्डाल में समझ बैठे हो। तुम्हारी क्या दुरदशा हो गई है। नई दुनिया के मनुष्यों में और पुरानी दुनिया के मनुष्यों में रात दिन का फर्क है। आधा कल्प से लेकर अपवित्र मनुष्य पवित्र देवताओं को माथा टेकते आते हैं। यह भी बच्चों को पहले 2 पूजा होती है शिव बाबा की जो शिव बाबा ही हमको पुजारी से पूज्य बनाते हैं। रावण तुमको पूज्य से पुजारी बनाती है। फिर बाप आकर ड्रामा पलेन अनुसार हमको पूज्य बनाते हैं। रावण आदि यह सभी नाम तो हैं ना। रावण बनाते हैं तो कितने मनुष्यों को बाहर से भगाते हैं। परन्तु अर्थ कुछ नहीं समझते। बाहर से भी कितने को भगाते हैं वह क्या समझेंगे। क्या तुम बन्दर सेना बनते हो। मनुष्य होकर फिर बन्दर बनते हो। राम ने बन्दरों की सेना ली, राम की सीता चुराई वह —

23-12-52

3

क्या2 बातें बैठ बनाई है। देवताओं की कितनी निन्दा करते हैं। ऐसी बातें तो बिल्कुल है नहीं। जैसे कहते हैं ईश्वर नाम-रूप से न्यारा है अर्थात है नहीं। वैसे यह जो कुछ भी खेल आदि बनाते हैं वह कुछ भी नहीं है। यह सभी है मनुष्यों की मत। मनुष्य मत को शैतानी आसुरीमत कहा जाता है। यथा राजा रानी तथा प्रजा सभी ऐसे बन जाते हैं। उनको कहा ही जाता है डेविल राज्य। डेविल ~~वर्ल्ड सभी एक दो गोली~~ देते रहते हैं।

तो बाप समझाते हैं बच्चे जब बैठते हो तो अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। तुम अज्ञान में थे तो परमात्मा को ऊपर में समझते थे। अभी तो जानते हो बाप यहां आया हुआ है। तो तुम ऊपर में नहीं समझते हो। तुमने बाप को यहां बुलाया है इस तन में। तुम जब अपने2 सेन्टर्स पर बैठते हो तो समझेंगे शिव बाबा मधुवन में इनके तन में है। भक्तिमार्ग में तो परमात्मा को ऊपर में मानते थे। हे भगवान हे परमात्मा पतित पावन कहते थे। अभी तुम बाप को याद करते हो, क्या बैठ करते हो। तुम जानते हो ब्रह्मा के तन में है तो जरूर यहां याद करना पड़ेगा। ऊपर में तो है नहीं। यहां आया हुआ है पुरुषोत्तम संगम युग पर। बाप कहते हैं तुमको इतना ऊंच बनाने में यहां आया हूं। तुम बच्चे यहां याद करेंगे। तुम भल विलायत में होंगे तो भी कहेंगे ब्रह्मा के तन में शिव बाबा है। तन तो जरूर चाहिए ना। कहां भी तुम बैठे होंगे तो जरूर यहां याद करेंगे। ब्रह्मा के तन में ही याद करना पड़े। कई2 बुद्धिहीन ब्रह्मा को नहीं मानते हैं। शिवबाबा ऐसे नहीं कहते कि ब्रह्मा को याद न करो। ब्रह्मा बिगर शिव बाबा कैसे याद पड़ेगा। बाप कहते हैं मैं इस तन में हूं। इसमें मुझे याद करो। इसलिये तुम बाप और दादा दोनों को याद करते हो। बुद्धि में यह ज्ञान है इनको अपनी आत्मा है। वह अपने मिरे हैं। उनको तो अपना शरीर है नहीं। बाप ने कहा है मैं इस प्रकृति का आधार लेता हूं। बाप बैठ सारी ब्रह्माण्ड और सृष्टि के आदि मध्य अन्त का राज समझाते हैं और कोई ब्रह्माण्ड को जानते ही नहीं। ब्रह्म जिसमें हम और तुम अण्डे रहते हैं। हम हैं सुप्रीम अण्डा। सुप्रीम अथवा नालेजफुल रहने वाले सभी उस ब्रह्मलोक शान्तिधाम के हैं। शान्तिधाम बहुत= बहुत मीठा नाम है। यह सभी बातें तुम्हारी बुद्धि में है। हम असल के रहवासी ब्रह्ममहतत्व के हैं जिसको निर्वाणधाम, वानप्रस्त कहा जाता है। यह बातें अभी तुम्हारी बुद्धि में है। जब भक्ति है तो ज्ञान का अक्षर नहीं इनको कहा जाता है पुरुषोत्तम संगम। जब कि चेंज होती है। पुरानी दुनिया में असुर रहते हैं तो उनको चेंज करने लिये बाप को आना पड़ता है। सतयुग में तुमको कुछ भी पता नहीं रहेगा। अभी तुम कलियुग में हो तो भी कुछ पता नहीं है। जब नई दुनिया होगी तो भी इस पुरानी दुनिया में हो तो नई दुनिया का मालूम नहीं है। नई दुनिया कब थी, पता नहीं। वह तो लाखों वर्ष कह देते हैं। तुम बच्चे जानते हो बाप इस संगम युग पर ही कल्प कल्प आते हैं। इसको इस विराट झाड़ का राज समझाते हैं। और यह चक्र कैसे फिरता है। वह भी तुम बच्चों को समझाते हैं। तुम्हारा धर्म ही है यह समझाने का। अभी एक एक को समझाने से तो बहुत टाईम लग जाये इसलिये अभी तुम बहुतों को समझाते हो। बहुत समझते रहते हैं। यह मीठी2 बातें फिर बहुतों को समझानी हैं। तुम प्रदर्शनी आदि में भी समझाते हो। अभी शिव जयन्ति पर और ही अच्छी रीत बहुतों को बताकर समझाना है यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है इसकी आयु कितनी है। खेल की डियुरेशन कितनी है। तुम तो एक्युरेट बतावेंगे ना। तुमको बाप समझाते हैं ना जिससे तुम देवता बन जाते हो। जैसे तुम समझकर देवता बनते हो वैसे औरों को भी बताते हो बाप ने हमको यह समझाया है हम किसकी ग्लानी आदि नहीं करते हैं। हम बताते हैं भक्ति को दुर्गति मार्ग, ज्ञान को सद्गति मार्ग कहा जाता है। अनेक कलियुगी गुरु सभी हैं डूबोने वाले। एक ही सद्गुरु है पार करने वाला। ऐसे2 मुख्य पाइन्ट निकाल कर समझाओ। भक्ति है अनराईटियस। ज्ञान है राईटियस। अनराईटियस मनुष्य राईटियस देवताओं के आगे माथा टेकते हैं। राईटियस अर्थात उनको नालेज है। नालेजफुल बाप द्वारा उन्हों को नोलेज मिली जिससे यह पद पाया। ऐसी2 पायन्टस निकालनी है। जो रांग रास्ते पर है उन्हों को राईटियस ~~बातें~~ बातें सुनाते जाओ। भक्ति मार्ग अनराईटियस मार्ग है। ज्ञान मार्ग है राईटियस मार्ग। ज्ञान सागर बाप ही आकर ज्ञान सुनाते हैं।—

ज्ञान सुनाकर सदगति कर देते हैं। फिर आधा कल्प दुर्गति होती ही नहीं। जो ज्ञान की दरकार हो। बाप जब आय तब आकर दुनिया को बदली करे ना। तो रावण माया हेल(नर्क) बनाता है। बाप आकर स्वर्ग बनाते हैं। हेल और हेविन दुःख और सुख है। यह सारा ज्ञान सिवाय बाप के कोई दे नहीं सकता। मनुष्य मे ज्ञान होता ही नही। देवताओं मे भी मे ज्ञान होता नहीं। बाप आते ही हैं संगम पर। बाकी वह है ज्ञान की प्रारब्ध। ज्ञान से है सुख दुःख का प्रारब्ध। ऐसी2 बातें पर विचार सागर मथन करो तो बहुत पायन्ट्स निकलेंगी। जगदीश बच्चा मैगजीन लिखता है यहभी मेहनत है ना। इसमे बड़ी एकान्त चाहिए। एकांत मे विचार सागर मथन होता है। इसमे बड़ी कान्ट्रेक्ट बुधि चाहिए। एकांत का टाईम भी अमृत वेले का अच्छा होता है। शुभ मुहुर्त है ना। बाप भी तुमको इस समय मे ही सुनाते हैं। भक्ति भी मनुष्य सवेरे करते हैं। इसलिये गायन है राम सिमर प्रभात ‥ आत्मा कहती है हे मेरे मन राम सिमर प्रभात को। आत्मा ही बात करती है हे मेरे मन। हे मेरे शरीर, ऐसे कब सुना? तो इसमे एकान्त अच्छी चाहिए। एकान्त मे चक्र लगावे तो भी याद अच्छी रहेगी। सवेरे के टाईम डर नहीं रहता है। गुंडों का डर रात को रहता है। बाप भी सवेरे बच्चों को बैठ समझाते हैं। बाप के सामने भी ज्ञान डांस के शोकिन चाहिए। जो सीख कर औरों को सिखलावे। ज्ञान मुरली को ही ज्ञान डांस कहा जाता है। इसी के लिये ही गायन है मुरली तेरी मे है जादू ‥ खुदा आकर मुरली चलाते हैं ना। ऊपर मे बैठ मुरली कैसे चलावेंगे। अभी तुम जानते हो शिव बाबा मधुबन मे ब्रह्मा के तन मे मुरली चलाते हैं। ड्रील सिखलाते हैं। वास्तव मे सभी जगह टाईम एक ही होना चाहिए। जब कि बाप बैठ बैटरी भरने ड्रील सिखलाते हैं। कहते हैं ना मिठरा घर ते घूरायें। बाप भह सर्विस एबुल बच्चों को याद करते हैं। सिध कर दिखाते हैं तुमको हम सभी से जास्ती याद करते हैं। रोज मुरली मे याद प्यार देते हैं। जास्ती प्यार किसका मिलता है। बाप का। बाप जानते हैं सारे कल्प मे एक ही बारी बच्चों को प्यार देने, ज्ञान देने जाते हैं। और बहुत मीठा बनाते हैं। तो तुम बच्चे भी प्यारे बनो। बाप से सीखो। कोई बहुत मीठे लगते हैं, कोई जैसे ठूं होते हैं। सन्यासी भी कहते हैं ना खूबसुरत बला है। इसलिये भागते हैं। फिर खुद तमोप्रधान बनते हैं। खुद ही सर्प बला बन जाते हैं। कहां आगे के सतोप्रधान सन्यासी कहां अभी के तमोप्रधान। पहले थे सर्प फिर वैराग्य आया फिर आकर सर्प बलाएं बनते हैं। बाबा के पास लिखते हैं बाबा गुरु से हमको यह हुआ। तमोप्रधान है ना।

अभी शिवजयन्ति आती है तो मनुष्यों को बाप का परिचय देने भभका करते हैं। बाबाने जो हमको समझाया है वह हम आप को समझाते हैं। बाबा बाबा अक्षर कब भूलो नहीं। पहले2 बाप का चित्र दिखाओ। बाबा हमको यह सिखलाते हैं ब्रह्मा द्वारा। तुम यह चित्र आदि बनाते हो मनुष्यों को समझाने लिये। 84 के चक्र की भी समझानी है। पायदस तो बहुत ही हैं। जो तुमको बाप ने समझाया है फिर औरों को समझाना है। भारत को कैसे हम रामराज्य बना रहे हैं। इसमे लड़ाई आदि की कोई बात ही नहीं है। देवतायें होते ही हैं अहिंसक। हिंसक को बाप अहिंसक बनाते हैं। तो ऐसे2 समझाना है। शिवजयन्ति वर्ष वर्ष मनाते हैं। तुम लिखते हो 33वीं शिव जयन्ति तो कोई की बुधि मे आता थोड़ेही है। क्या शिव बाबा को कोई इतने वर्ष हुये हैं। जो 33वीं शिव जयन्ति मनाते हैं। पूरे उल्लू लोग हैं। नहीं तो पूछना चाहिए ना ऐसे क्यों लिखते हो। शिव जयन्ति मनाते हो ना। तुम वर्ष2 मनाते हो। अभी कहेंगे 33वीं शिवजयन्ति मनाते हैं। जरूर शिव बाबा आया होगा कुछ तो रहा होगा नाकि चला गया होगा। कितनावर्ष हुआ है। कोई पूछते नहीं हैं शिव बाबा कहां है। जो तुम 33वीं शिवजयन्ति मनाते हो। अपने ही गोरख धंधे मे हैं। समझाना है हम 33वीं शिव जयन्ति मनाते हैं। तो जरूर शिव बाबा यहां है ना। बड़ा2 बोर्ड लगाना चाहिए। जिस पर लिखना है 33वीं शिव जयन्ति। निमंत्रण मे भी लिखो। अच्छा रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुड मार्निंग और। रूहानीबच्चों को रूहानी बाप की नमस्ते।